वह बीमार नहीं है

ऑटिज़्म वाले बेटे का पालन

गोदावरी वर्मा

गौरव का जन्म 29 सितम्बर, 2010 को भोपाल के एक अस्पताल में हुआ था। वह ऑपरेशन से पैदा हुआ था। जन्म के समय गौरव का वज़न लगभग एक किलो आठ सौ ग्राम था। अतः उसको अस्पताल में एक सप्ताह तक इन्क्यूबेटर मशीन में रखा गया था। उसे जन्म के समय से ही पीलिया था। सुबह की धूप दिखाने पर भी पीलिया ठीक नहीं हुआ, तो हमने उसे डॉक्टर को दिखाया। उसे अस्पताल में भर्ती किया गया एवं उसके कई प्रकार के टैस्ट कराए गए परन्तु उसे पीलिया क्यों है, यह डॉक्टर को भी पता नहीं चल रहा था। अन्त में डॉक्टर द्वारा कैंसर अस्पताल में हीडा स्कैन टैस्ट[i] कराया गया। तब जाकर पता चला कि गौरव को बाइलरी एट्रेसिया[ii] नामक बीमारी है, जो कि लाखों में से किसी एक बच्चे को होती है।

डॉक्टर ने हमें बताया कि गौरव का ऑपरेशन करना पड़ेगा, वो भी गौरव के जन्म की तारीख़ से साठ दिन के अन्दर। उसका ऑपरेशन किया गया और डॉक्टर ने हमें बताया कि ऑपरेशन सफल रहा। गौरव की बीमारी धीरे-धीरे ठीक होने लगी। वह लगभग चार माह तक अस्पताल में भर्ती रहा। गौरव की दवाइयाँ लगभग आठ माह तक चलती रहीं एवं उसकी बाइलरी एट्रेसिया नामक बीमारी पूरी तरह से ठीक हो गई।

समय धीरे-धीरे निकलने लगा। गौरव लगभग दो वर्ष का हो गया परन्तु वह कुछ भी बोलता नहीं था। गौरव कुछ बोलने की कोशिश भी नहीं करता था। वह घर में तो सबके पास जाता था परन्तु घर के बाहर किसी के भी पास नहीं जाता था। गौरव ट्रेन, ऑटो आदि हर तरह की मशीन की आवाज़ से डरता था। खिलौनों से भी कम ही खेलता था। उसे गोल-गोल चीज़ें बहुत ही पसन्द थीं एवं वह अपने हाथ भी गोल-गोल घुमाता रहता था। परन्तु गौरव ऐसा क्यों करता है, यह हमें समझ में नहीं आ रहा था। इसी प्रकार समय निकलता रहा । गौरव लगभग तीन वर्ष का हो गया। हमने सोचा कि गौरव को स्कूल में डालेंगे तो वह अन्य बच्चों के साथ रहेगा एवं बोलने लगेगा। हमने गौरव का एडमिशन एक प्राइवेट स्कूल में करवा दिया। गौरव तीन महीने तक स्कूल गया, फिर भी उसमें किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं आया।

उसके बाद हमने गौरव को समर्पण संस्था में दिखाया तब हमें उसकी ऑटिज़्म बीमारी का पता चला। ऑटिज़्म क्या होता है, यह हमें पता ही नहीं था। समर्पण में हमें बताया गया कि आरुषि संस्था में थेरेपी, स्पेशल एजुकेशन व अन्य तरीक़ों के माध्यम से ऐसे बच्चों को प्रशिक्षित किया जाता है।

हम गौरव को आरुषि ले गए। तब तक वह लगभग 4 साल का हो गया था। आरुषि में जाने से उसमें धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा। स्पीच थेरेपी की मदद से वह थोड़ा-थोड़ा बोलने लगा। पहले वह कुछ भी समझ नहीं पाता था, परन्तु अब वह काफ़ी कुछ समझने लगा है। गौरव को स्कूल में क्या परेशानियाँ आती हैं, वह यह सब बता नहीं पाता था। वह आरुषि व स्कूल दोनों जगह जाता रहा। धीरे-धीरे वह हिन्दी-अँग्रेज़ी, लिखना व पढ़ना सीख गया।

आरुषि में उन्होंने हमें सलाह दी कि हम गौरव का एडमिशन केन्द्रीय विद्यालय में करवा दें। गौरव अब केन्द्रीय विद्यालय एवं आरुषि दोनों जगह जाता है। आरुषि में उसकी स्पेशल एजुकेशन चल रही है। वह कक्षा दो में है। गौरव का मुझे अन्य बच्चों के मुक़ाबले काफ़ी ज़्यादा ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि वह आज भी पूरी तरह से अपना ध्यान नहीं रख पाता है। उसके जन्म से लेकर आज तक मुझे उसका बहुत ज़्यादा ख़याल रखना पड़ता है क्योंकि वह आज भी ठीक से समझ नहीं पाता है कि किस चीज़ से उसे नुक़सान हो सकता है एवं कौन-सी चीज़ उसके फ़ायदे की है। अगर ध्यान न दिया जाए तो वह एक ही चीज़ करता रहता है। गौरव को खाना खाने के लिए, पढ़ने-लिखने आदि हर एक काम के लिए बार-बार बोलना पड़ता है।

अब वह लगभग नौ वर्ष का हो गया है। उसके पैदा होने से लेकर आज तक मैंने उसे अकेले नहीं छोड़ा है। गौरव के ठीक होने के लिए मैं जो कर सकती हूँ, कर रही हूँ। गौरव अपने कई काम स्वयं कर लेता है एवं कई काम के लिए वह आज भी मुझ पर ही निर्भर है। गौरव में पहले से काफ़ी परिवर्तन आ गया है, परन्तु अभी भी उसे काफ़ी कुछ सीखना बाक़ी है।

उसकी बीमारी के बारे में हमारे परिवार के सभी सदस्यों का पता है एवं उनका व्यवहार गौरव के प्रति बिलकुल सामान्य है। हमारे समाज में इस बीमारी के प्रति जागरूकता बहुत ही कम है। अन्य अभिभावकों एवं शिक्षकों से मेरा यह कहना है कि इस प्रकार के बच्चे आपसे केवल यह चाहते हैं कि आप उनसे 'सामान्य' बच्चों की तरह व्यवहार करें। उन्हें आपकी किसी भी प्रकार की हमदर्दी एवं दया की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के बच्चे आपसे केवल प्यार व सामान्य व्यवहार की उम्मीद रखते हैं। उन्हें किसी भी अन्य तरह की अपेक्षा आपसे नहीं है। गौरव जैसे अन्य सभी बच्चे समाज से केवल यही चाहते हैं कि उन्हें सब जगह समानता का अधिकार मिले। समाज उन्हें हीन भावना से न देखे, उनमें कुछ कमियाँ ज़रूर हैं परन्तु उनमें किसी के प्रति कोई छल-कपट और द्वेष नहीं है।



[i] हीडा स्कैन एक हेपेटोबिलरी इमिनोडायसेटिक एसिड (HIDA) स्कैन है; यकृत, पित्ताशय और पित्त वाहिकाओं की समस्याओं के निदान के लिए उपयोग की जाने वाली एक इमेजिंग प्रक्रिया। (Mayoclinic.org)

[ii] बाइलरी एट्रेसिया एक दुर्लभ जठरान्त्रीय (गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल) विकार है। इस विकार में यकृत के बाहर स्थित पित्त वाहिका का एक हिस्सा या पूरी नली नष्ट या अनुपस्थित होती है। (Rarediseases.com)



गोदावरी वर्मा
गौरव वर्मा की मम्मी